कनाडा के फ्रेजर इंस्टीट्यूट और नई दिल्ली स्थित 'सेंटर फॉर सिविल सोसायटी' द्वारा पिछले दिनों जारी की गई 'विश्व आर्थिक स्वतंत्रता : वार्षिक रपट-2012' नाम की रपट दुनिया भर में आर्थिक स्वतंत्रता की स्थिति के बारे में नई जानकारी देता है

आर्थिक स्वतंत्रता लाती है खुशहाली

■ सतीश पेडणेकर

दरअसल, ईमानदारी से जीवन-यापन करने के लिए बिना किसी अनावश्यक दखल के उत्पादन और व्यापार करने की स्वतंत्रता ही आर्थिक स्वतंत्रता का सार है। इसके अंतर्गत आते हैं संपत्ति रखने, उसका उपयोग करने और बेचने का अधिकार, विवादों का समुचित व शीघ्र समाधान करने के साथ-साथ अनुबंधों को लागू करने का अधिकार। और फिर जीवन व संपत्ति की संपूर्ण सुरक्षा ताकि हर कोई सुरक्षित शांतिपूर्ण तरीके से अपनी जीविका चला सके। यह रपट इस बात की गणना करती है कि देश की नीतियां और संस्थाएं किस मात्रा में आर्थिक स्वतंत्रता का समर्थन करती हैं।

दुनियाभर सें राजनीतिक और सामाजिक स्वतंत्रता पर तो काफी विचार किया गया है, लेकिन आर्थिक स्वतंत्रता पर काफी कम ध्यान दिया गया, जबकि आर्थिक स्वतंत्रता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। हर वर्ष प्रकाशित होनेवाली यह रपट इस महत्वपूर्ण कमी को पूरा करने की कोशिश है। इस वर्ष की आर्थिक स्वतंत्रता रपट के मुताबिक दुनियाभर में विश्व आर्थिक स्वतंत्रता सूचकांक में थोड़ी सी वृद्धि हुई। वह 2010 में 6.83 रही। हालांकि 2009 में वह तीन दशक में सबसे कम स्तर पर यानी 6.79 पर पहुंच गया था। इस रपट के मुताबिक भारत 144 देशों में 111 वें स्थान पर रहा है। भारत पिछले वर्ष भी 103 वें स्थान पर था। भारत की कुल रेटिंग 6.26 रही इस तरह से वह चीन, बांग्लादेश, तंजानिया और नेपाल से पीछे रहा।

सेंटर फॉर सिविल सोसायटी के अध्यक्ष पार्थ शाह ने कहा कि अमेरिकी और यूरोपीय देशों के ऋण संकट के मद्देनजर विश्वभर के देशों ने कठोर रेगुलेशन बनाए और बड़े पैमाने पर खर्च किया है। इसके कारण तात्कालिक तौर पर आर्थिक स्वतंत्रता कम हुई है और दीर्घकालिक दृष्टि से समृद्धि घटी है, लेकिन इस वर्ष विश्वभर में आर्थिक स्वतंत्रता सूचकांक में थोड़ी सी वृद्धि होना उत्साहवर्धक है। विश्व के 10 अव्वल देशों में सभी पांच उपमहाद्वीपों का प्रतिनिधित्व है।

विश्व की आर्थिक स्वतंत्रता रपट को हर वर्ष कनाडा के प्रमुख लोकनीति थिंक टैंक फ्रेजर इंस्टीट्यूट द्वारा 90 देशों के स्वतंत्र इंस्टीट्यूटों के सहयोग से तैयार किया जाता है। इस वार्षिक रपट को इकोनॉमिक फ्रीडम नेटवर्क के सहयोग से प्रकाशित किया गया है। यह 90 देशों और क्षेत्रों के स्वतंत्र शोध और शैक्षणिक संस्थाओं का समूह है। रपट 2012 को जेम्स वार्टने, फ्लोरिडास्टेट यूनिवर्सिटी, ए लासन, सदर्न मेथोडिस्ट कॉलेज और बेलियाट कॉलेज ने तैयार किया है। इसके प्रकाशन में 144 देशों को अनुक्रमित किया गया। इन देशों में 2010 में दुनिया की 95 प्रतिशत आबादी रहती है। आर्थिक स्वतंत्रता को नापने के लिए उसने एक आर्थिक स्वतंत्रता सूचकांक भी विकसित किया है।

दुनिया के जिन 144 देशों का सर्वे किया गया, उनमें हांगकांग फिर अव्वल रहा। उसके बाद सिंगापुर, न्यूजीलैंड, स्विटजरलैंड, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा का स्थान रहा। बड़े औद्योगिक देशों में अमेरिका को लंबे समय से आर्थिक स्वतंत्रता का चैंपियन माना जाता रहा है। इस वर्ष उसका स्थान बहुत नीचे गिर गया है। वैश्विक अनुक्रम में उसका स्थान लगातार गिरता रहा है। इस वर्ष अमेरिका उसके सबसे नीचे यानी 18वें स्थान पर पहुंच गया है। जबकि 2008 में वह दसवें और 2002 में दूसरे स्थान पर था। यह गिरावट अमेरिकी सरकार द्वारा ज्यादा ऋण लेने और ज्यादा खर्च करने के कारण आई है। वेनेजुएला 144 देशों में आर्थिक स्वतंत्रता में मामले में सबसे नीचे रहा। म्यांमार, जिम्बाब्वे, रिपब्लिक ऑफ कांगो और अंगोला सबसे नीचे के पांच देशों में रहे।

शोध से यह स्पष्ट होता है कि उच्च स्तर की आर्थिक स्वतंत्रता वाले देशों में रहने वाले लोग ज्यादा समृद्ध हैं, उन्हें ज्यादा राजनीतिक और नागरिक स्वतंत्रताएं हासिल हैं। उनकी जीवन की संभाव्यता भी ज्यादा है। पार्थ शाह ने कहा, "दुख की बात यह है कि सबसे नीचे के देशों में, जीवन की गुणवत्ता बहुत निम्न स्तर की है। समृद्धि कम और विकास के अवसर सीमित हैं।"

विश्व आर्थिक स्वतंत्रता रपट आर्थिक

स्वतंत्रता का प्रमुख पैमाना है जिसे 42 कारकों के आधार पर तैयार किया गया है ताकि आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देनेवाली नीतियों के आधार पर विश्वभर के देशों का एक अनुक्रम तैयार किया जा सके। आर्थिक स्वतंत्रता के आधारस्तंभ हैं व्यक्तिगत चुनाव, स्वैच्छिक विनिमय, प्रतियोगिता की स्वतंत्रता, निजी संपत्ति की सुरक्षा। इसके अलावा इन क्षेत्रों में भी आर्थिक स्वतंत्रता की गणना की जाती है। पहला-सरकार का आकार। दूसरा- कानूनी ढांचा और संपत्ति के अधिकार की सुरक्षा। तीसरा-स्थिर पैसे तक पहुंच। चौथा- अंतरराष्ट्रीय व्यापार की स्वतंत्रता, ऋण, श्रम और व्यापार के नियम।

पूरी रपट को www.freetheworld.com पर भी पढ़ा जा सकता है। आर्थिक स्वतंत्रता के प्रमुख कारकों में भारत की गणना (1 से 10 तक जहां ज्यादा अंक होना आर्थिक स्वतंत्रता के उच्च स्तर की ओर संकेत करता है।) पिछली रपट में सरकार का आकार 6.33 था जो बदलकर 6.37 हो गया। कानूनी व्यवस्था और संपत्ति का अधिकार 6.48 से बदलकर 6.22 हो गया। स्थिर पैसे तक पहुंच 6.6 से बदलकर 10 हो गई। अंतरराष्ट्रीय व्यापार की स्वतंत्रता 6.42 से बदलकर 6.55 हो गई। ऋण, श्रम और व्यापार के नियम 6.57 से बदलकर 6.48 हो गए।

दुनियाभर में हांगकांग 10 में से 8.90 अंक प्राप्त करके सबसे उच्च स्तर की आर्थिक स्वतंत्रता उपलब्ध कराता है। उसके बाद न्यूजीलैंड (8.69) है। स्विट्जरलैंड(8.24), ऑस्ट्रेलिया और कनाडा 7.97 अंकों के साथ चौथे स्थान पर है। इसके बाद बहरीन(7.94), मारीशस(7.90), फिनलैंड(7.88) और चिली(7.84) का स्थान आता है।

अन्य बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का अनुक्रम इस प्रकार है- अमेरिका(18वां), जापान(20वां), जर्मनी(31वां), कोरिया (37वां), फ्रांस(47वां), इटली (83वां), मैक्सिको(91वां), रूस(95वां), ब्राजील(105वां), चीन(105वां) और भारत (111 वें) स्थान पर है। जिन 144 अधिकार क्षेत्रों में गणना की गई, उनमें वेनेजुएला में आर्थिक स्वतंत्रता का स्तर सबसे कम है। वह म्यांमार, जिम्बाब्वे, रिपब्लिक ऑफ कांगो और अंगोला के साथ सबसे नीचे रहे।

पिछले दशक के दौरान कुछ वर्षों में आए बदलावों के कारण उनके क्रम को समायोजित करने पर कुछ अफ्रीकी देशों और पूर्व साम्यवादी देशों में आर्थिक स्वतंत्रता में सबसे ज्यादा वृद्धि दिखाई दी। रवांडा इस वर्ष 44 वें स्थान पर रहा, जबकि 2000 में वह 106 वें स्थान पर था। मालवी 114 वें स्थान पर था, जो अब 84वें स्थान पर आ गया है। घाना 101वें स्थान से 53वें स्थान पर खिसक गया है। वहीं रोमानिया 110 से 42 वें पर आ गया है। बुल्गारिया और अल्बानिया भी क्रमशः 108 और 77 से 47वें और 32वें स्थान पर आ गया है।

हां, जिन देशों में आर्थिक स्वतंत्रता में सबसे ज्यादा गिरावट देखी गई है, वे हैं वेनेजुएला। यह 94वें स्थान से 123वें स्थान पर पहुंच गया है। अर्जेंटीना 34वें स्थान से 110वें पर पहुंच गया है। अमेरिका दूसरे स्थान से 19वें स्थान पर पहुंच गया। रपट ने इस बात पर भी गौर किया गया है कि अनुक्रम में उच्च स्थान पर स्थित देशों में सबसे गरीब 10 प्रतिशत लोगों की आय 11,382 डॉलर है, जबकि कम आर्थिक स्वतंत्रता वाले देशों में उनकी आय 1,209 डॉलर है। औसतन सबसे अधिक आर्थिक स्वतंत्रता वाले देशों में सबसे गरीब 10 प्रतिशत लोग कम आर्थिक स्वतंत्रता वाले देशों की औसत आबादी की तुलना में लगभग दोगुने अमीर हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि आर्थिक स्वतंत्रता वाले देशों में भले ही असमानता हो, लेकिन वहां लोगों का जीवन काफी खुशहाल है। जीवन स्तर काफी ऊंचा है। जबकि जिन देशों में आर्थिक स्वतंत्रता नहीं है, वहां असमानता भी है और सामान्य जनता गरीब है। उसका जीवन स्तर बहुत निम्न स्तर का है।

क्या आर्थिक स्वतंत्रता का उपयोग केवल अमीरों के लिए है? इसकी जरूरत उनके लिए ज्यादा है जो समाज के सबसे ज्यादा निम्न आर्थिक वर्ग में गिने जाते हैं। एक गरीब फेरीवाले से बड़ा मुक्त उद्यम का हिमायती कोई हो नहीं सकता। आर्थिक स्वतंत्रता के साथ विभिन्न लाइसेंसों और निरर्थक कानूनों को हटाना भी जुड़ा है, जिनके दायरे में लोग जीते हैं। स्वतंत्रता के अभाव और अत्यधिक नियंत्रण से गरीब लोग ही सबसे ज्यादा कुप्रभावित होते हैं। अमीर लोग तो सरकारी नियंत्रण के बावजूद भी अपना रास्ता निकाल लेते हैं, जबकि गरीबों के पास इसके अलावा कोई चारा नहीं हैं। ■■

> "आर्थिक स्वतंत्रता वाले देशों में भले ही असमानता हो, लेकिन वहां लोगों का जीवन काफी खुशहाल है। जीवन स्तर काफी ऊंचा है। जबकि जिन देशों में आर्थिक स्वतंत्रता नहीं है, वहां असमानता भी है और सामान्य जनता गरीब है। उसका जीवन स्तर बहुत निम्न स्तर का है।"

पार्थ शाह